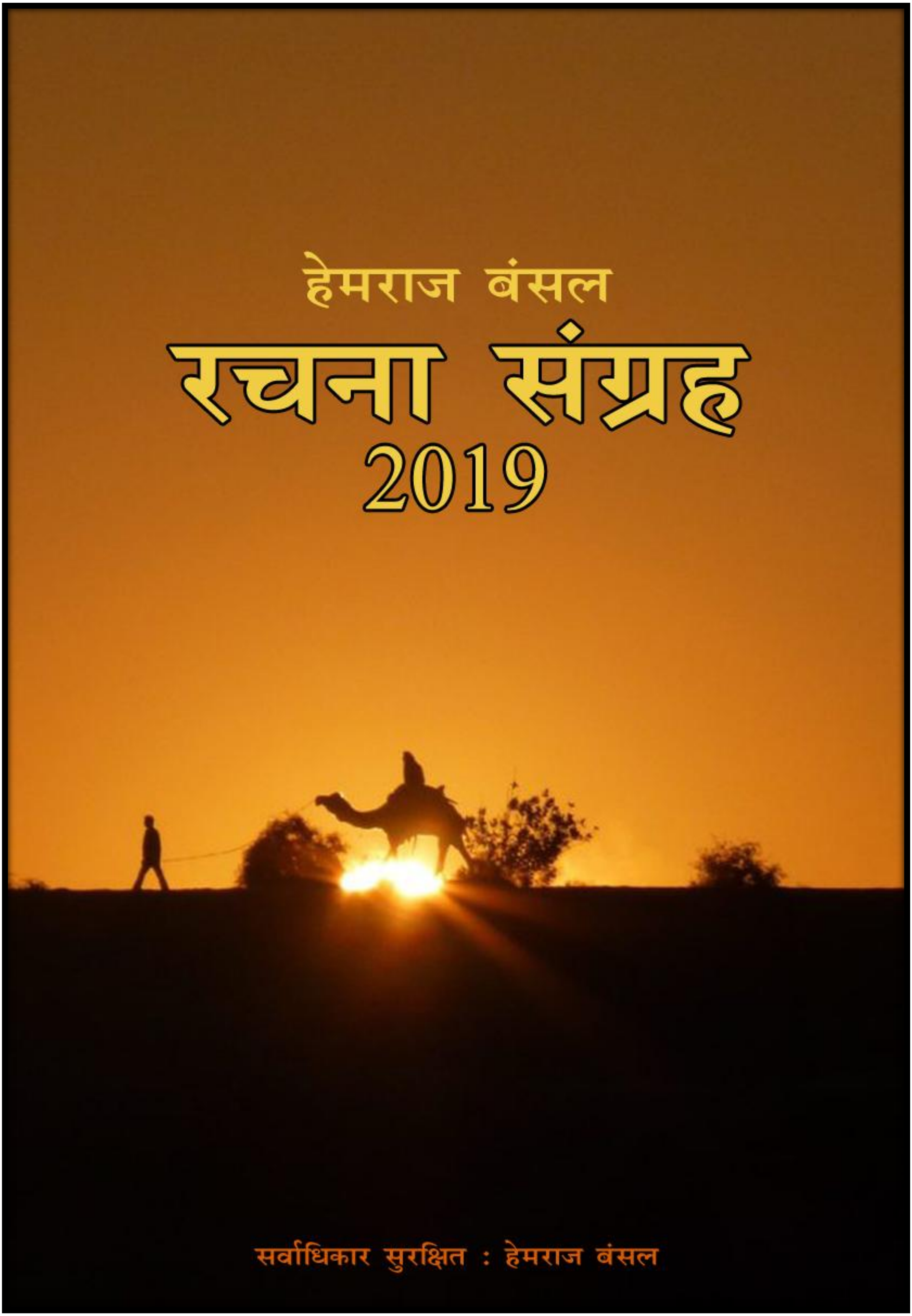

हेमराज बंसल

रचना संग्रह 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित : हेमराज बंसल

रचना संग्रह

2019

लेखक : हेमराज बंसल

संस्करण : 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित : हेमराज बंसल

बारां (राज.) 325205

मोबाइल 09414191003

www.bansalsahitya.com

hemraj@bansalsahitya.com

श्राद्ध पक्ष में कन्याओं के व्रत–पर्व

संकलन

लोक कलायें, पर्व, पूजा, भारतीय संस्कृति की पहचान है। इसी क्रम में श्राद्ध पक्ष में कन्याओं द्वारा किये जाने वाले व्रत पूजा विशेष स्थान रखते हैं।

प्रतिवर्ष आश्विन कृष्ण एकम् से अमावस्या तक का पखवाड़ा कन्याओं के लिये विशेष व्रत पर्व अनुष्ठान वाला रहता है। हाड़ौती की कन्याओं को श्रेष्ठ घर–वर की कामना से इस समय चार व्रत दिलवाये– करवाये जाते हैं।

पहला सामी रोटी– इसमें कन्या प्रातः स्नान के बाद रात की बची बासी रोटीयां हथेली में लेकर घर के द्वार पर खड़ी हो जाती है। पुराने समय में इस सामी रोटी को खाना बड़ा पुण्य का काम समझा जाता था। घुड़सवार भी घोड़े से उतर कन्या को प्रणाम् कर रोटी लेता और उसे खाना अपना अहोभाग्य समझता था। अब श्रद्धा बदल गई है। आजकल यह रोटी कोई भी पुरुष या घर का सदस्य ही उतार लेता है और गाय को खिला देता है।

दूसरा व्रत गौ का खूंटा सींचना– स्नान के बाद मंजे हुये लोटे से कन्यायें गाय के खूंटे पर पानी डालने जाती है। इससे बालिकाओं गौ सेवा की रुचि जाग्रत होती है।

तीसरा व्रत तुलसी चरणामृत लेना–स्नान के बाद मंदिर जाकर तुलसी चरणामृत लेने से निश्चय ही बच्चियों में धर्म ध्यान के प्रति आस्था जाग्रत होती है। इन तीनों व्रतों के पूरा होने के बाद ही कन्या अन्न ग्रहण करती है।

चौथा व्रत मौन लेना–सायं सूर्योस्त के बाद करीब आध घंटा पूर्ण मौन रहने का व्रत लिया जाता है। मंदिर की झालर आरती के बाद व्रत खुलवाया जाता है। मौन होने से पूर्व सामने मौजूद व्यक्ति से हाथ जोड़ कर राम राम की जाती है। हमारे यहां मौन छुड़वाने का लगभग निम्न मंत्र प्रचलित था।

आम्बो मोर्‌यो, नीम्बो मोर्‌यो, मोर्‌यो दाड़्यो दाख।
सरी किसन जी सेवा बैठ्या चडी चूगला कासै बैठ्या।
झालर बाजी कटावर बाजी संध्या फूली तारा उग्या।
राजा रानी कासै बैठ्या उठो राणी पिओ फाणी।
छोड़ी मून सीताफल लाग्या, मुनी जी की मून छूटी, मुनी बाबा राम राम।

मौनी मून छुड़वाने के लिये मंत्र बोलने वाले के सामने (अक्सर मां) हाथ जोड़कर खड़ी रहती है। मंत्र पूरा होने के बाद मंत्र छुड़वाने वाले से मौनी राम राम करके मून छोड़ती है।

पांचवां पर्व सांझया पूजन–अंत में कन्याये प्रतिदिन शाम को सूर्यास्त के बाद अपनी संगी सहेलियों को साथ सांझया की पूजा करती है। गोबर से दिन में किसी घर की बाहरी दीवार पर पूर्ण मनोयोग से सांझया मांडी जाती है एवं रंगबिरंगी पन्नी पाठों से सजाई जाती है। फूलमाला चढ़ाती है। दीपक अगरबत्ती सें पूजा आरती करती है और प्रसाद भी बांटा जाता है।

गायी जाने वाली आरती –

रिम झिम.छोटी सी मुस्कान बाइ आरती उतारे रे, रिमझिम रिमझिम . . .
(सारी पूजा करने वाली बच्चीयों के नाम से यही गाया जाता है।)
रिमझिम रिमझिम पेड़ के नीचे रे, रिमझिम रिमझिम बाजा बाजै रे,
दूसरी आरती–आरत्यां म्ह चून म्हेलूं, बड़ा दाणा की बींटी म्हेलूं, भाभीजी को छल्लो म्हेलूं पांच चछीटा म्हेलूं , सांझा माई की आरती गाऊं रे।

रोज अलग अलग आकृति में सांझया बनाई जाती है। पहले दिन से बाहरवें दिन तक क्रमशः– पांच पछीटे, सूर्य नारायण, चन्द्रमा, केल, पांच क्वांरे, खजूर, सती का जोड़ा, बीजणी, नौ डोकरियां, फूला छाबड़ी, जनेऊ, बांदरवाळ बनाई जाती है। तेहरवें दिन कोट बनाया जाता है जिसमें बारह दिन की सभी आकृतियां तो बनाई ही जाती है इसके अतिरिक्त गाड़ी में बैठाया हुआ सेज सजुळिया भी बनाया जाता है। कोट के बाहरी हिस्से में ढोली, मेहतराणी, गूजरी, कागला, चोंच में चिठ्ठी लिये सुगना चड़ी, तथा दीपक भी बनाये जाते हैं। तेरस का बनाया कोट मावस तक चलता है। कई अन्य आकृतियों के बनाने के भी प्रमाण मिलते है। जैसे सेठ सेठानी, घट्टी चूल्हा, पनघट सूप, आदि।

प्रतिदिन सुबह सांझी को उखाड़ कर एक स्थान पर घर के बाहर रख दिया जाता है। इसमें भी पांच कुवारों को दूध चढ़ा कर, सत्ती के जोड़े को धूप अगरबत्ती लगा कर तथा नौ डोकरियों को खीर पिलाकर खोलते हैं। सोहलवे दिन पड़वा को कोट खोला उखाड़ा जाता है और उस खाली दीवार पर रोळी का सातिया बना दिया जाता है। फिर सारी पूरे पखवाड़े की की सांझी को सळा दिया जाता है अर्थात् नदि या तालाब में प्रवाहित कर दिया जाता है। सळाने के बाद दस कंकर लाये जाते हैं जिनकी दशहरे के दिन पूजा होती है। पूजन के लिये दोने में दस कंकर और श्रद्धानुसार मुद्रा रख कर कोई भी दस घरों में बांट दिया जाता हैं। इसे साझाबाई का उद्यापन कहते हैं। इसी प्रकार डूमडा (ढोली ढोलन) का भी उद्यापन किया जाता है।

कहीं कहीं संझया पर्व की पौराणिक दंत कथा इस प्रकार बताई गई है।
महर्षि गौत्तम के नदी में स्नान करने जाने के बाद राजा इंद्र छल से उनकी पत्नी अहिल्या से दुराचार करता है। नदी द्वारा सुचना देने पर महर्शि गौत्तम आश्रम पहुंचते हैं एवम् कुपित हो राजा इंद्र को नपुंसक होने का, पत्नी अहिल्या को शिला बनने का श्राप देते है। उनकी दो पुत्रियां भी वहां थी। बड़ी अंजली जिसे बिनब्याही मां बनने का तथा छोटी सांझया जो आश्रम के बाहर खड़ी थी, सदा घर से बाहर रहने का श्राप मिलता है। अंजली बाद में हनुमानजी की मां बनी। सांझया सदैव घर के बाहर ही रहती है। यह माना जाता है कि इन पद्रह दिनों में सांझया पीहर आई हुई है पर श्राप के कारण उसे घर में प्रवेश की इजाजत नहीं है।

सामान्य भाषा में संध्या समय को सांझ कहते हैं, सांझ को पूजा करने से इस पर्व का सांझा नाम होना भी संभव है।

सांझया पर्व भारत के राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में विभिन्न नामों से मनाया जाता है। इंटरनेट पर भी इस पर्व के बारे में जानकारी उपलब्ध है। अब शहरीकरण से यह संस्कृति समाप्त होती जा रही है पर गांवो में अभी भी यह परंपरा बनी हुई है।

स्थान के हिसाब से अलग अलग गीत स्थानीय बोली भाषा में इस अवसर पर सेज्यां की पूजा के बाद बालिकाओं द्वारा गाये जाते है। गीत किसने लिखे, पता नहीं। शायद ऐ नन्ही नन्हीं 6 साल से 10 साल तक की बालिकाओं के मन से निकले उद्गार हों जो पीढ़ी दर पीढ़ी और साल दर साल चल रहें है।

हाड़ौती में प्रचलित गीतों की पंक्तियां संग्रहित करने का प्रयास।

1. काजल टीको ल्यो भाई, काजल टीको ल्यो।
काजल टीको ले क सैज्यां बाई क तांई द्यो भाई, सैज्यां बाई क तांई द्यो।
सैज्यां को पीहर सांगानेर , परण पधार्या गढ़ अजमेर।
राजा जी री चाकरी कल्याणजी रो देसं, छोड़ो म्हारी चाकरी पधारो आपणै देस।
(ये तीन अलग अलग गीत भी हो सकते हैं।)

2. चंदा चांदनी की रात, आयौ भाइल्यां को झुंड।
सासू खेलबा न दे, सासू ब्वारो खडावै। चंदा चांदनी की रात।
काम करावै, लत्ता ध्वावै, फाणी भरावै आदि काम जोड़ गीत का विस्तार किया जाता है।

3. धम से करेला धम रे धमं,
या रंग रे करेगा रंग रे रंग, ढाबा पीले ढब रे ढब
यो करेलो म्हन बरज्योछो, सैज्यां क बाण्ण बरज्यो छो,
नायां क बाण्ण मत जा जे, नायां की छोर्यां मोड़ी छः।
ले ले पातल दौड़ छः धम रे करेला धम रे धम।
सभी जाति की छोरियों के लिये गाया जाता है जैसे खात्यां की.. . बसेलो ले.. बाण्यां की ... तागड़ी ले . . .आदि और गीत का विस्तार होता रहता है।

4. कह रे कंडारां का छोरा थनै म्हारी सांझा देखी छी?
'देखी छी र आई देखी छी, हाथ मं लाल कटोरा दूधां पीती देखी छी।'
'क्ह र बामण का छोरा थन म्हारी सैज्यां देखी छी'
'देखी छी र बाई देखी छी, नाडा म्ह लत्ता धोती देखी छी।'
क्ह र नाई का छोरा थन्ह म्हारी सैज्यां देखी छी।

'देखी छी र बाई देखी छी, नाडा में पगल्यां धोती देखी छी।'
क्ह र धाकड़ का छोरा थन म्हारी सैज्यां देखी छी?'
'देखी छी र देखी छी, खलाणा का क्वा प फाणी भरती देखी छी।'
और जाति समाज के नाम जोड़ गीत बढाया जाता है।

5. कमली क सासरै जा ज री स'वा। खाटो रोटी खा ज री स'वा।
'और मैलो ब्याणजी छोको लाग्यो।'
'असी द्यूंगी राखव्या क चमचा की;'
न्ह म्हारा ब्याण जी ला'ग जावैगी, भाई सगां म्ह बरी लागै गी। (हास परिहास संवाद)
गीत कन्याओं के नाम बदल बदल कर गाया जाता है।
कहीं 'सूरज्या क सासरै जाऊंगी री मां, खाटो रोटी खाऊंगी री मां
काम कराऊंगी तड़का स, बिंदी लगाऊंगी भड़का स।
'और मैलो ब्याणजी, भूखा छ्यां।'
'असी द्यूंगी दारी'का क चमचा की;'
न्ह म्हारा ब्याण जी ला'ग जावैगी, भाई सगां म्ह बरी लागै गी।

6. घर का पछोकड़ा म्ह तोर्यां को पेड़, कोई तोड ज्यो मति।
तोड'गो री म्हारी मां को जायो बीर,
कोई बरज ज्यो मति। (भाई से स्नेह)

7. सैज्यां तो मांगै लाल पीला फूलड़ा,
क्हां सूं लाऊॅ लाल पीळा फूलड़ा।

8. खोड्या रे मस्कोड्या रे नाई, म्हारी सैज्यां न ले बा आयो।
'म्हारी सैज्या क काण्णै, कांई कांई गहणा लायो।'
नाक मं नथड़ी कान मं बाळी, और गळा की खुंगाळी।
तमड्यो बेच तम्बाकू लायो, आखै गैल' पीतो आयो।
गुड गुड गुड गुड करतो आयो।
कहीं गीत थोड़ा अलग भी है
तमड्यो बेच कणकती लायो, व्हा भी गत की न्ह लायो।
ताकडी में चलम तम्बाकू, हुक्को पीतो पीतो आयो,
आखै गैलै धसूं धसूं करतो आयो।

9. सासू पूछै, हे बहू! आंगण आलो किन्ह कर्यो?
'आयों छो रो म्हारी मां को जायो बीर थोड़ा सा पगला धोया छा।'

सासू पूछै, हे बहू! दाळ मं खाडो किन्ह कर्‌यो?'
'आयों छो रो म्हारी मां को जायो बीर, दो चमचा म्हन बणाई।
सासू पूछै हे बहू! चून म्हं खाडो किन्ह कर्‌यो।
'आयों छो रो म्हारी मां को जायो बीर, दो फुल्का म्हन पोया छा।
सासू पूछै हे बहू! घी म्हं खाडो किन्ह कर्‌यों।
'आयों छो रो म्हारी मां को जायो बीर, दो फुल्का म्हन चोपड़्या छा।

10. धोली पैळी डूंग्र्‌यां जाऊंगी री मां,
पेळा चावल लाऊंगी री मां।
बीरो नौत जिमांऊंगी री मां,
बीरो म्हारो भाई छ री मॉं।
बीरो म्हईं चूनरी लावै छ री मां,
लड़ै भड़ै भौजाई छः री मां।

11. गुड गुड गाड़ी गुडकती जाये,
जिम्ह म्हारा सैज्यां बाई बैठ्या जाये।
टीकी लगाता जाये, मेंहदी लगाता जाये, चुड़लो चमकाता जाये।
बींछ्यां बजाता जाये। घाघरो घमकाती जाये।
बीरा बीरा रे गैलो बता दे चामल को, चामल को छः नीलो फाणी
नीली घोड़ी नीली लगाम।

12. छोटी मोटी नथड़ी घढ़ा दे री मां,
थारा राज म्हं फे'र ल्यूंगी री मां।
सासरिया का नकटा लोग खावै खजूर्‌या बेचै बोर।
ठांगला क ठल्लो लाग ग्यो, लूट ल्यो रे बोर।

13. टम टम टोकरी, टम टम तेल,
सांझया लागी बातां म्हं, कुत्तो पी ग्यो तेल।
कांई करूं सासू जी, जाऊं म्हारा बाप क, लाऊं थांको तेल।

14. गाड़ी क नीचे म्हन जीरो पायो, जीरा को म्हन खाटो बणायो।
खाटो बणा'र म्हन बीरो जिमायो। बीराजी न्ह क्ही यो तो खाटो खाटो लाग्यो।
खाटो खाटो लाग्यो म्हन गायां प मैल्यो, गायों को म्हन दूध दुहायो।
दूध दूहा'र म्हन खीर बणाई। खीर बणा'र म्हन बीरा जी न जिमाई।
बीराजी न्ह खी, 'म्हन मीठी मीठी लागी।' मीठी मीठी लागी व्हांन चुनड़ी उढ़ाई।
चुनडी ओढ'ऱ म्हूं पाण्यो चाली, पाणी गी म्हार कांटो भाग्यो।

कांटो भाग तांई खून खड़ ग्यो, खून खड़तांई चूनड़ी स पूछ्यो।
चूनरी तो म्हारी राती राती होगी, राती राती हो तांई म्हन धोबी क दे दी
धोबी न उंह की लीरां लीरां कर दी।

15. कोट प बैठी चड़ी उड़ाओ म्हारा दादाजी,
सांज्या चाली सासरे मनाओ म्हारा दादाजी।
कोट प ब'ठी . . . ।
मंजू चाली सासर' मनाओ म्हारा दादाजी।
कोट प ब'ठी . . . ।
(सभी पूजा करने वाली लड़कियों के नाम से यही पंक्ति दोहराई जाती है।

16. 'पाडो बता री भाभी पाडो बता।'
'पाडो तो खूंटै बंध्यो जी बाई सा।' रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो।
'खूंटो बता री भाभी खूंटो बता।'
'खूंटा प तो फोट्टो कर द्यो री बाई सा,'। रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो।
'फोट्टो बता री भाभी फोट्टो बता',
'फोट्टो तो रेवड्यां पड़ ग्यो री बाई सा' रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो,
रेवड्यां बता री भाभी रेवड्यां बता,
रेवड्यां तो खेतां पड़गी बाई सा। रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो,
'खेतां बता री भाभी खेतां बता',
'खेतां म्हं तो फसल्यां बोई दी री बाई सा;रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो,
'फसल्यां बता री भाभी फसल्यां बता',
'फसल्यां तो खलांणां चल गी री बाई सा'। रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो,
'खलाण बता री भाभी सा खलाण बता।'
'खलाण सूं तो फसलां बक गी री बाई सा।' रिमझिम रिमझिम कठू पड्यो,

17. खंजड़ा प चढ़ चढ़ झांकू रे लाल खंजडला।
आगै का म्हारा भाई जी रै लाल खेंजड़ा,
पाछै का म्हारा ससरा जी रे, लाल खेंजड़ला।
खेंजड़ा प चढ़ चढ़ झोंकू रे लाल खेंजड़ा।
आगै की म्हारी माई रे लाल खेंजड़ा,
पाछै की म्हारी सासू रे लाल खेंजडला।
खंजड़ा प चढ़ चढ़ झांकू रे लाल खंजडला।
म्हारा भाई जी का हाथ म्हं छब्यो रे लाल खेंजड़ा,
म्हारा सुसराजी का हाथ म्हं डन्डो रे लाल ....
खेंजड़ा प चढ़ चढ़ झोंकू रे लाल खेंजड़ा।

म्हारी जीजी का हाथ म्हं पालणो रे लाल ..
पालना म्हं भायो सूतो रे लाल .
भाया का हाथ महं घूघरो रे लालकृ
घूघरो तो छन छन बराजे रे लाल ..
म्हारी सासू का हाथ म्हं डीबरो रे लाल दृ
.डीबरा म्हं सूडी का बच्चा रे लाल...
बच्चा तो चूं चूं करै रे लाल खेंजड़ा।

18. सांझा बाई बाजार म्ह डोले,
हाड़ौती बोल बोले, गुजराती चाल चालै।
कान्धा घड़ा घड़ी का बेवड़ा,
चालै तो हालै उ'हका बेवड़ा।

19. म्हारा दादाजी चाल्या री तड़का हाळी नौकरी।
म्हारा ससराजी चाल्या री रात हाळी नौकरी।
म्हारा दाजी लाया री धोळा धोळा चावल,
म्हारा ससराजी लाया री सेळा बासी टूकड़ा।
म्हारी जीजी न राध्यां री धोला धोळा चावल,
म्हारी सासू न रांध्या ंरी सेळा बासी टूकड़ा।
म्हारी जीजी न जन्मया री कान्हा कन्हैयालालजी,
म्हारी सासू न जन्मया सूडी का सा बच्चा।

20. डूंगर ऊपर डूंगरी जीं प बैठ्यो सुनार।
आछो घड़ जै रे सुनार म्हारी सांज्या को हार।
नथड़ी गड़ाई को कांई लेगो ,टिकलो गड़ाई को कांई लेगो,
पायजेब गड़ाई को कांई लेगो, हार गड़ाई को काई लेगो,
चली जाऊंगी म्हूं र'ल म्ह ब'ठ, कांई म्हारो जीव लेवगो।

21. जामुन कै नीचे गमग्यो म्हारो बटुवो,
चांदी ले ल्यो सोनो ले ल्यो दे द्यो म्हारी बटवो। जामुन क . . .
चांद सूरज सूं हठेली मांगे, धीरज की बहू सूं हठेली मांगे।
सोना की अंगूठी भैरू बाइ के गड़ैया,
ऊपर मोर्या नचैया, नीचे घूघरा बजैया।

22. सैज्यां की जीजी सैज्यां न संभाळ।
व्हांकी असी बात छ्ः, बात छ, जरा सी बात छः।
पोयो छो मोत्यां को हार, मोत्यां की लड़ म्हार गले लटके,
कांचळिया की कस म्हार मोरां लटक।
घाघरा को लावणो म्हारै एड्यां लटकै।

23. म्हारो दादो कोटा चाल्यो म्हारो दादो कोटा चाल्यो
लायो छ गमल्या च्यार च्यार,
म्हारी भाभी रांधण लागी रांधै छै रांधै छैः गमल्या च्यार च्यार।
म्हारी भाभी पोबा लागी पोबा लागी , पोवै छ फलक्या च्यार च्यार।
म्हारो दादो खाबा लाग्यो खाया छ फल्क्या च्यार च्यार।
म्हारां दादो देबा लाग्यो द्या छ डंडा च्यार च्यार
म्हारी भाभी रोबा लागी रोई छ धंटा च्यार च्यार
म्हारों दादो मनाबा लाग्यो मनाई छ धंटा च्यार च्यार।
म्हारी भाभी हांसबा लागी, हांसी छ धंटा च्यार च्यार।

24. अळी गळी मत आ जं'र बीरा, सब समझैगा चोर छ।
चौड़े पाड़े आ ज''र' बीरा, जै सब समझगा साहूकार छै।

25. उड़ जाऊंगी री मां पंख लगा र,
थोड़ा द'न की पाहुणियां।
म्हारा भाईजी घड़ावै सोला सागड़िया,
म्हारा दादाजी घड़ावे सोला सागड़िया।
म्हारी ताई, ओ म्हारी माई!
ओ मुंडा सूं तो बोल,
म्हां परदेशी कोयलियां।

26. सैज्यां थू थारै घर जा,
थारी माई मारेगी कूटेगी।
दे''ळी के दचका देगी,
चांद बण्यो गुजरात,
हिरण का सा बड़ा बड़ा दांत।
गंडकड़ा भसगा, छोरा छोरी डरफगा।

27. दादाजी जाऊं न औरा न,
थांकी ही हाथ का जोर पड़ग्या बीरा नं
बीरो म्हारो यूं कहे म्हारे शुम्भक साड़ी लाओ न।
शुम्भक साड़ी यूं कहे पंचपदयो चुड़लो लाओ न।
एकली न पहरुं, म्हारी सैज्यां ननद बुलाओ न।

संकलन कर्ता– हेमराज बंसल बारां मो. 9414191003
www.bansalsahitya.com
hemraj@bansalsahitya.com
सहयोग– रामदिल कंडारा नलका एवं मित्रगण।

हाड़ोती गजल

गीत फ्याळी गा।
आग्या फावणा, गीत फ्याळी गा।
नरख ब्याई न, छोछी गाळी गा।
तरंग भांग की, अर चंग बाज रया
फागण की रुत, हो मतवाळी गा।
मदन सणगारी धरती बसंत मं
टिकलो कढूल्या अर खुंगाळी गा।
डाब डबूल्या सूं पूजै होळी
राग बाजणा रूप रुपाळी गा।
अबीर गुलाल लारां पुचकारी
देवर भाभी जीजा साळी गा।
सुसरा जेठ मस्कोड्या हो रया
छोड़ काण काम जगा बाळी गा।
स्वाद न आ रयो लाडू बाफला मं
परण्या का चत की घरहाळी गा।
होळी बळगी प्रहलाद बचग्यो
नरसिंगजी की किरपा न्याळी गा।
नीम आम खेंजड़ा बोरा ग्या
नरख कुदरत की हरयाळी गा।
गोप्यां मार री गोप झेल रया
होळी बिरज की लठ्ठ हाळी गा।
रुत की मस्ती मं आंधी हो बंसल
छोरी डोकरी गौरी काळी गा।
आग्या फावणा, गीत फ्याळी गा।
नरख ब्याई न, छोछी गाळी गा।
मैं मानूं हार सखी (हजल)
बस यही होता है हर बार सखी।
तुम जीतती, मैं मानूं हार सखी।
समझ न पाया मैं नासमझ अब तक
क्यों होती है आपस में रार सखी।
तू मेरे मन मंदिर की मूरत
मैं तो बस तेरा सेवादार सखी।
तुम बिन नहीं कोई जीवन मेरा
सहन करुं हंस कर हर फटकार सखी।

मेरा भूल से कभी मुंह खुल गया
तू अंदर मैं रोया बाहर सखी।
मैं किसी भी कोने में रह लूंगा
खोलो अपने हिरदय के द्वार सखी।
मिली नौकरी महिला कोटे से
मैं रह गया बेरोजगार सखी।
तुम चलाती हो गृहस्थी की गाड़ी
मैं बना हुआ तुम पर भार सखी।
साथ में लगता मैं चपरासी जैसा
तुम बनठन कर जाती बाजार सखी।
चलो तीर्थ में डुबकी लगा आयें
मान लो, मत करना इंकार सखी।
करवा चौथ का व्रत रख लेती हो
पहुँच न जाऊं कहीं हरिद्वार सखी।
तेरे जीवन में मेरी महत्ता
आज तो कर लो तुम स्वीकार सखी।
बस यही होता है हर बार सखी
तुम जीतती, मैं मानूं हार सखी।

गजल

मन की बात बता दो आज सखी, क्यों लग रही हो नाराज सखी।
मुख पर वेदना के स्याह बादल, लगती है तबियत नासाज सखी।
चहकती सदा सोन चिरैया सी, कहां गुम हुई वो आवाज सखी।
घर बना स्वर्ग तेरे आने से, करता हूं किस्मत पर नाज सखी।
गाता था तन्हा बेसुर गाने, तुम आई हो बनकर साज सखी।
विश्व सुन्दरी मेरे चितवन की, हमको रहता तुम पर नाज सखी।
मेरे कनकौओं की डोरी तुम, तुम ही उमंगों की परवाज सखी।
भृकुटी तानकर देखती हो जब, कत्ल कर देता यह अंदाज सखी।
मन की बात बता दो आज सखी क्यों लग रही हो नाराज सखी।

बस इतना रखना ध्यान प्रभो, जब भूलूं देना ज्ञान प्रभो 16 मात्रा
मैं मूरख माया में डूबा, हर लेना मेरा अज्ञान प्रभों
राष्ट्र हित में अर्पण कर दूं, यह जीवन और यह जान प्रभो।
नजर झुकाकर सेवा करलूं, न होवे कभी अभिमान प्रभो।
जिस दिन रहूं न जग के लायक, बेशक हर लेना प्राण प्रभों

फली रोज मलछा अब मल छ आंतर पांतर
स्वारथ का बण्या भाइला बदलै छ आंतर पांतर
पांच साल तांई जै नेता सोया खूंटी ताण
चुनाव देख बजारिया सांकलां आंतर पांतर
डर कांई न बच्यो दुख्यारां मं राज को
मनख्यां को हो रयों कतल आंतर पांतर
धरम ईमान तो बालपणा सूं ही भूल ग्या
होव पेपर आउट अर नकल आंतर पांतर।
बेरोजगारी की मार बड़ी मजदूरयां प
भूखा ही सो जाव छ टाबर आंतर पांतर।
फली तो कहर मच जाव छो गांव मं
अब तो होरी छ लव मैरीज आंतर पांतर।
आकळकूटो मच्यो आखा मुलक मं
होरया धरणा बंद हड़ताल आंतर पांतर।
खणगेट्यो भी लजा ग्यो यां का कामां स
नेता अहलकार रंग बदल रया आंतर पांतर

गोबर गंदगी कोई न यो छ इंसान क घणों काम को।
गोबर को महातम बताव दादो गोबरीलाल नाम को।
गोबर सूं घर बण और आंगण लिपै पांतरे।
गौमुत्र गोबर की खाद अन्न धणौ उपजावै खेत में।
होली का डाब डबूल्या अर क्वारियां सैज्यां मांडै।
गोवर्धनजी अर भाई दूज बणा गोबर नै पूजे।
गोबर का छाणा जन्म स मरण ताई साथ निभावै।
धुणी दे नजर उतारअ अर बसंदर कर भोग लगावै।
छाणा प ही रोटी बण अर छाणा ही ई देह न सलगाव।
छाणा का एक पराउंडा सूं सर्दी बरसात कट जावै।

मंचीय गीत

असी कोराणी म्हार' गल' पड़ी। सुख साता सन्दी सूळी छड़ी।
बिस्तर म पड़ी पड़ी क चाय छाव, आहलायां कर कर क न्हाबा जाव
खदी पेट दुखै खदी मोर दुखाव, अबार तो या माथो बांध पड़ी
सुख साता सन्दी सूळी छड़ी।
घणो उछाह छयो मन म लाड़ी आवगी
तडक स्याम ताती ताती रोटयां ख्वावगी।
म्हारी माई थोड़ी साता मं आ जावगी।
माई बापू समझ रया छया इन' भापड़ी
सुख साता सन्दी सूळी छड़ी।
रात तो सो बा न दे तडक लाग नींद, काम कराणो तो दूर रैव बींद
दोनी बोझ कस्यां उठाउं म्हूं काची कळी।
सुख साता सन्दी सूळी छड़ी।

दोहा– आम कहां से पायेगा, जिसने बोया नीम।
दस दस बरस सजा मिली, बाबा राम रहीम।
.आसानी से जल मिले निर्ममता से भोग।
बिसलरी को सहेजते, बूंद बूंद उपयोग।
.खारे सागर से जलद, मीठा पानी लाय।
ताल तलैया खो गये, अमरित कौन बचाय?
घर बैठे फोकट मिले , बेशकीमती नीर।
तब हिरदय होती नहीं बर्बादी की पीर।
.एचओटू से जल बना, बता रहा विज्ञान।

नीर बिना संभव नहीं, किसी जगह पर प्रान।
प्रथम गुरु मोरि मात है, दूजे गुरु श्री तात।
कोई नहीं पढ़ा सके, विपदा जो सिखलात।
शिक्षा जिससे भी मिले सबको ही गुरु मान।
शत्रु मित्र शिक्षक परिजन या मूरत पाषाण।
मांगे विनीत भाव से शरणागत हो जाय।
शीश झुकाय लखन खड़े, रिपु दशानन पाय।
मान घणौ थां को करां, थां ही सबका प्राण।
रोटी भाजी जगत नै, निपजावे करसाण।
राष्ट्र नायक बन उभरे, मोदी अटल कलाम,
सीतामाता छोड़कर, पूजित हुय श्रीराम।
जीएसटी लगा रहा, चिंता रूपी रोग।
हालत रोज बिगड़ रहे, दवा लगे ना योग।

भविष्य के नारे

1.लोटा लेकर खेत पर जायें शौच पर मिट्टी डाल कर आये।
2.अपना बहुमुल्य पानी बचायें प्रातः भ्रमण कर सेहत बनायें।
3.धरती को उपजाऊ बनायें नदियों को प्रदूषण से बचायें।

मनु सुभाव सूं चार वरण बणाया
सन्दा मनख्यां मं चारूं वरण समाया।
होली शूद्र बण खेलां क्षत्री बणां दशराव।
राखी प बामण दवाळी वैश्य ख्वाया।

गिले शिकवे इधर भी हैं उधर भी हैं।
दिल में तड़प इधर भी है उधर भी है।
मन की खिड़की खोल कर देख जरा
मिलन की आस इधर भी है उधर भी है।

गंगा अनुराग की किधर है
बातें विश्वास की किधर है
आईना साफ करके देख
जो इधर है वही उधर है।

कईयों का सहारा जो था, कईयों के सहारे वो है।
मृत्यु से डराता था कईयों को, अब मरघट के किनारे वो है।
आसमान चढ़ा भरा घमंड में, बहुत गरजा दमका अभिमानी।
धरती पर गिरा तो कैद हुआ, अबला की मटकी बन पानी।

बाल कविता

आई गरमी बहे पसीना, चैन हमारा सूरज छीना।
पंखा कूलर की हुई सफाई, महिना मई जून जुलाई।
धूल भरी आंधी आती, बिजली झट गायब हो जाती।
नीम के नीचे सोते दादा, हमें सुलाते छत पर ज्यादा।
पोस्ते की खीर बनाई, उंगली चाट चाट कर खाई।
पना खरबूजे का भाता, आछ और अमरस बहुत सुहाता।
पापा तरबूज लेकर आते, बच्चे तो बस कुल्फी खाते।
पापा ठंडाई घुटवाते, हम लिम्का चट कर जातें।
बरफ का गोला नीबू वाला, बार बार उसमें शरबत डाला।
गरमी जब जब भी आती, स्कूल से भी छुट्टी मिल जाती।
फिर नाना के घर जायेंगे, तालाब में खूब नहायेंगे।
मजा तो बगीचे में आता, पत्थर मार कर आम गिराता।
शहतूत करोंदा लगता अच्छा, नमक लगा चाटें आम कच्चा।
बेर तोड़ना हमें नहीं आता, मामा का भाई सिखाता।
मजा तो बगीचे में आता, पत्थर मार आम गिराता।
रोटी चावल पापड़ अचार नानी करती खूब मनुंहार।

बाहर सन्नाटा, भीतर कोलाहल। अमरित के बदले, दे रहा हलाहल।
निज सुत ही बनकर, रिपु भारत मां के करते अपने ही आंगन को घायल।
जिसने भड़काये नौनिहाल अपने। भड़काओं उसके घर भी दावानल।
अपना घर बुलंद, उसका घर जर्जर। मजहबी रंग में, मत हो तू पागल।
रक्तपान करती केसर क्यारी का, बतलाओ मोदी, कब निकलेगा हल।

मनहर धनाक्षरी

गधा गज ऐसा बना, सदा रहा तना तना।
खैर के खूंटे सा वह, आंखें दिखा अड़ा हुआ।
धमकाये अभिमानी, तानाशाही मनमानी।
खुमार सत्ता का माथे जुबान में चढ़ा हुआ।
चुनाव देख नरमी, उतरी सारी गरमी।
उछाला मुद्दा राम का, ठंडे बस्ते पड़ा हुआ।
टूटा झूठा भ्रम जाल, बिगड़े घर के हाल।
हाथी के दांत पकड़, राहुल खड़ा हुआ।

जब जब खुले केश बचा नहीं कोई शेष,
नारियों का दुनियां में सम्मान होना चाहिये।
नारी से ही है सद्गति, नारी ही करे दुर्गति,
सभी पुरुषों को यह भान होना चाहिये।
वर्णिका संघर्ष करो, आगे बढ़ो मत डरो,
मवाली कोई भी हो, पूरा इंसाफ होना चाहिये।
पूरा देश देगा साथ, अबला नही अनाथ,
अहंकार रावण का, राख होना चाहिये।

फिर से लहू लुहान भारत मां की आनबान,
दोषियों को कोई यहां ढूंढकर तो लाइये।
आतंकी गिराये मार सीमा कर आये पार,
घुसे कैसे शिविर में चूक तो बताइये।
हथियार साथ लाये कैसे काम कर पाये,
आंख धूल कैसे झोकी जांच तो करवाइये।
कौन थे मददगार भारत मां के गद्दार,
ऐसे देशद्रोहियों को फांसी लटकवाइये।

पीठ पीछे वार कर कुछ शेर मारकर,
ये बुजदिल कायर मत तू गुमान कर ।
करोंडों उठेंगें हाथ कोई नहीं देगा साथ,
मत लडना किसी को अपना मानकर।
बबूल जिसने बोया वही जार जार रोया,
वाणी हाफिज को भूल ध्यान दे आवाम पर।
आंख कोई उठी गर जंग कोई छिड़ी गर,
खेलेगे करोड़ों वीर अपनी जान पर।
आंधी कुछ ऐसी चली सांझ कुछ ऐसी ढली,
मार्तण्ड के मुख पर व्याकुलता छाई है।
पालीवाले साहूकार, धरम के अवतार,
ईमान कई खो रहे, नोटबंदी आई है।
आम आदमी खुश है केजरीवाल फुस्स है,
मोदी मोदी नारे सुन उडती हवाई है।
जुगत भिड़ा रहे हैं, ठिकाने लगा रहे हैं,
कदापि बचेगी नहीं, काली जो कमाई है।

राष्ट्रनायक बनाया, बहुमत से जिताया,
नरेन्द्रजी मोदी को दिलाया बहुत मान है।
अच्छे दिन आये नहीं, कालाधन लाये नहीं,
नोट बंदी से जनता, हुई हलकान है।
जीएसटी का जंजाल, व्यापारी है बदहाल,
दाम इतने गिरे कि किसान हैरान है।
आत्महत्या आंदोलन, लाठी गोली से दमन,
पंजा तना, झुक रहा, कमल निशान है।

ओज गीत हाड़ौती न मलगा रोबा हाळा।
बैरी मत करै चाळा, न्ह मलगा रोबा हाळा।
बहेंत भरया को कागलो, हाथ भरया की जीभ।
भैजो सड़ग्यो थारो जी म पड़गी पीप।
छछुन्दर मत खाडै पजामा बारै नाड़ा। न्ह मलगा रोबा हाळा।
हडक्यो होग्यो गण्डक, गळयां गळयां फर रयो।
ढुंगा रसकण्या चाल अर सिंग्हां सूं भड़ रयो।
मरबा का दन आ ग्या भेजा लठ्ठ खा बाळा। न्ह मलगा थन रोबा हाळा।
बिलाव सामै उंदरो, बछमड़ा मूंडै मांखी।
स्वाल्यो उचक्यो घणो, नाहर न काण राखी।
माछर एक झापट म, हो जावै खून खुराळा। न्ह मलगा

थारै म्हारै आड़ी झांकतो र, गरयाळा की धूल फॉकतो र,
फड़ जातो तो मैट बण जातों, खाडा खोद गार फांकतो र
सलीमो देखबा म्हूं न जारयो, थू ही यां गाणा प नाचतो र
कोफ्यां किताबां बेच बीड्यां पी, आज होगी टीबी खांसतो र।
म्हूं तो बण जाउंगो पटवारी, थू खेतां में हळ हांकतो र।
पढ लिख परण ग्या सब, थू रै ग्यो, गांव की लुगायां नै टापतो र।
एक काम बच्यो छ नेतो बण अर, अहलकारांन न फटकारतो र।

श्री बारां हास्य क्लब साठा। बतर्ज श्री हनुमान चालीसा।
रचनाकार हेमराज बंसल बारां

दोहा –वन्दे मदन कटारिया, करूं माधुरी ध्यान।
महिमा हंसने की लिखूं, भाभी देना ज्ञान।1
चिकित्सा व अध्यात्म का, बनाय अद्भुत घोल।
दुनिया को परोस दिया, हास्य योग अनमोल।2
बोल कृष्णापति हेमराज की जय।

चौपाई
हास्य मित्रों की महिमा न्यारी, जानत बारां नगरी सारी।1
सुबह घूमने पारक जायें, कदम गिन गिन चक्कर लगायें।2
बंसल खेलन को कछु लाई, खेलत खेल युवा बन जाई।3
राधे राधे का जाप करें, अधर सारा बृजधाम धरें।4
छोटी छोटी गईयां गावै, सुमिरन हिरदय गोकुल आवै।5
जोर जोर से ताली ठोंके। सियार सम हो हो कर भौंकें।6
ताली पर हंसना गुणकारी, जानत कायनात यह सारी।7
जब खंडेलवालजी आवें, द्रुतगति से ताली बजवायें।8
प्राणायाम आत्मबल दायी, स्वर साधना हम नित्य गाई।9
मिलकर ठहाके जब लगायें, वृक्ष पुष्प भी तब मुस्कायें।10
हॅसने से न होय बीमारी, हॅस हॅस भूलें दुख भारी।
चुटुकले सुना सुना हंसाये। हर इक अपना फन दिखलाये।11
मेवारामजी बड़े ही बांके, लगवाते अलमस्त ठहाके। 12
गोविंदजी निकालें गाली, रावतजी नित करें रुदाली।13
ठैंनुऑजी की अलग माया, योग सिखाना इनको भाया।14
अदलक्खाजी घड़ी दिखायें, सवा सात घर वापस आयें।15
बाइक देख पॉव भर आते, अशोक झाम संग लद जाते।16
प्रथम प्रधान हरचंदानी, खूब चलाई निज मनमानी।17
प्रथम गोठ काकोनी जाई। रमेशजी कीन्ही अगुवाई।18
कोटा कटारियाजी आये। बारां क्लब बैनर लहराये।19
तीन अशोक अरु ओम आवै, दोउ महेन्दर आदर पावै।20
हॅसने से न होय बीमारी, हॅस हॅस भूलें दुख भारी।
सुदर्शन महावीर दयाला, बैकुंठ गये छोड़ जंजाला।21
चाय कचौरी की लत परहीं, खा पी कर ही क्यों न मरहीं।22
रावत बंसल ऋतु फल लावै, मनीष ताहे रोग बताये। 23

रमण चित्तौड़ा मन बनाये, पार्टी निश्चय ही हो जाये।24
बीस तारीख हरि की आवै, मंगल गुप्ता चाय पिलाये।25
सदस्य उसके घर जावें, तीन दिन गर पारक न आवे।26
फीस नहीं आने की कोई, पार्टी देवे छोड़े जोई।27
अध्यक्ष कोई भी बनायें, रमण रावत अपनी चलायें।28
अध्यक्ष सदा इसने फैंटा, कोष पकड़ कर बंसल बैठा।29
कौन कितना कमीशन खाये, हेमराज कुछ नहीं बताये।30
हॅसने से न होय बीमारी, हॅस हॅस भूलें दुख भारी।
उत्सव का चाहिये बहाना, जनम परण या जूते आना।31
टोंग्याजी की सेवा सच्ची, खेत पर दें व्यवस्था अच्छी।32
चपरासी खुदही बन बैठा, हरि रहता है ऐंठा ऐंठा।33
जो दिमाग घर रख कर आता, वही शूर क्लब में टिक पाता।34
कोई ना हिसाब लगाते, सारे दोनों हाथ लुटाते।35
जिस पत्तल में खायें खाना, उसे अवश्य छेद कर आना।36
पुरुषोत्तमजी के लब चिपके, अशोकगर्ग के दंत दमके।37
रावत नहीं निभाता वादा, गारंटी दे उलझे दादा।38
विष्णुजी सिंघल जब जब आते, खान पान का न्यौता लाते।39
धन धन विवेकानंद बगिया, हास्य क्लब ने तहं जन्म लिया।40
हॅसने से न होय बीमारी, हॅस हॅस भूलें दुख भारी।
केसी सर नये नये आये, देकर पार्टी आदर पाये।41
हंसना सदा सेहतकारी, हंस हंस भूलें दुःख भारी।42
हंसने से न होय बीमारी, जाने कायनात यह सारी। 43
पार्टी में सपरिवार आयें, सच्चा सुख जीवन का पायें।44
बाबूलालजी गोत गोयल, भाषा संभाषण में रोयल।45
रच डॉट कॉम लाफ्टर योगा, जग मानस बनाया निरोगा।46
शिमला कांता आगे आई, उर्मिला सुधा साथ निभाई।47
संगठन भाव मन में आया, महिला हास्य क्लब बनाया।48
शकुंतलाजी अच्छा बोलें, पार्टी मंचों पर रस घोलें।49
वंदनाजी बड़ी गुणवनती, दाल खिलाये माला बुनती।50
हॅसने से न होय बीमारी, हॅस हॅस भूलें दुख भारी।
पूंपाड़ी कैलाश बजाये, पगले नित्य पैसे मिलाये।51
एक्टर जादूपाल सुरीला, अनिल चौधरी छैल छबीला।52
कमलेशजी स्वाद से खाते, परिजन क्लब पर दोष लगाते।53
जगत में मिसाल बनी न्यारी, नंदजी मदनजी की यारी। 54
प्रथम रविवार मइ का आवै, विश्व हास्य दिवस सब मनावै।55
विश्व हास्य दिवस जब मनाते, हंस हंस सबको छाछ पिलाते।56

त्रिवेन्द्रम उदयपुर या गोवा, कन्वेशन में दिखाया जलवा। 57
पांच सदस्य अगर हो जातें। पार्क प्रार्थना करके आते।58
हास्य व्यंग्य कहकहे ठहाके, हिरदय मगज दुरुस्त बनाते।59
बंसल रचित यह हास्य साठा, पक्का हंसोड़ा नित्य गाता।60
हॅसने से न होय बीमारी, हॅस हॅस भूलें दुख भारी।
बोल कृष्णापति हेमराज की जय।
कांतापति रावत की जय।

दोहा. आभारी हूं संत का, नहीं करूं अभिमान।
बंसल रचना यह करी, तुलसी से ले दान।3
प्रताप चौक पर मिलें, हंसते और हॅसाय।
राणाजी आशीष दें, दोनों हाथ उठाय। 4
नंदवानाजी के काम की, करनी है तारीफ।
नौकरिया करते हुये, रहे हास्य क्लब चीफ। 5
नारी शक्ति जाग उठी, कर किटी का आगाज।
पत्नी पति के संग है, हंसने में भी आज। 6
दुनिया जाये भाड़ में, नहीं सताये पीर।
निज स्वारथ के काम में, रहते सदा अधीर। 7
हास्य क्लब में साथ लाना, मसखरापन अरु खिलखिलाना
मुस्करा कर जो जतन करहीं, कारज उसके सबहीं सरहीं।

आज मनायें होली

खुशियों से भर सब की झोली, आओ आज मनायें होली।
बात नहीं हो यह इक दिन की, उमंग नहीं रहे इक दिल की
महल कुटिया कुबेर सुदामा, संग संग सब करे ठिठोली। आओ आज
मलो ललाट गाल हंस हंस कर, फेंको अंजुरी में भर भर कर,
रंग बिरंगी और प्रेमसनी, गुलाल अक्षत चंदन रोली। आओ आज मनायें
दुश्मन को भी गले लगा लें, गोली इक क्षमा की खा लें,
बुलालें पास रखें न दूरी, कोयल सी कर मीठी बोली। आओ आज मनायें
सूरज चंदा और सितारे, जलधि हिमनद तरुवर सारे,
उल्लासित हो सबने अपनी, मुठ्ठी उपहारों की खोली। आओ आज मनायें
स्पर्श करती जहां मस्त पवन, बौराता जहां भ्रमर गुंजन,
आलिंगन की चाहत में तब, कलियों ने भी बाहें खोली। आओ आज मना लें होली
तितली फूल फूल मंडराये, मन पसंद पराग चुन लाये,
मधुर मास के मधुर मिलन को, मदन बनाई भव्य रंगोली। आओ आज
पीत झाड़ नवजीवन लाई, पुष्प सज्जित धरा मदमाई,
हरियाली कुदरत ने ओढ़ी, कामदेव ने आंखें खोली। आओ आज मनायें
पकवानों की महक बुलाती, गौरी रंग देख छिप जाती,
हंस हंस पगलाया देवर, भावज भुजियन भंग घोली। आओ आज मनाये होली।
कान्हा ने मारी पिचकारी, श्याम रंग राधा रंग डाली,
हरि बरसाने खेलन आये, लेकर ग्वाल बाल की टोली। आओ आज मनायें

हाड़ौती गजल छोटी बहर

डंक मार डस, गळो फाड़ भस। दांत गड़ा डस
जीतै हर बार, दाब काची नस।
धरा राम की, मरजी ज्यां बस।
ठंड आगी, गोदड़ी मं धस। नोट बंक मं, थां मां बेबस।
लंण मं लाग, मार भूख तस।
तडफा न बरी, अब तो कर बस।
काळा लोभ मं, भाया मत फस।
हाकम बण बठ्यो, कुर्सी मं धस।
घणी बंसल छानो र और मत भस।

होली पर लिखी रचना
इस बरस मन में रह गया कुछ मलाल,

चुनी नहीं हरी पीली नीली लाल।
बस कुछ गुलाब की पंखुडियां ही डाल,
मल नहीं पाया किसी के गौरे गाल,
हास्य क्लब ने फरमान निकाला है,
नहीं खेलना इस होली रंग गुलाल।

मुक्तक
ठोकर खाकर भी आदत गई नहीं है
हरकत दोस्त तुम्हारी सही नहीं है।
इंसान सबक लेता है गलतियों से
सयानों से नसीहत सुनी गई है।
तलवे चाट किसी के फूलना नहीं
औकात अपनी कभी भूलना नहीं
गरियाते कमजोर ही बाहर से
गरजने वाले बरसते नहीं हैं।

दीपक खुश है कि रवि ढलने वाला है।
कुटिया खुश है कि महल गिरने वाला है।
घाटी खुश है कि शिखर ढहने वाला है।
बाज की ओर शर संधान देख देख
पंछियों ने बहेलियों को पाला है।

अपनी सलामती का जश्न यूं मनाना ठीक नहीं।
मसान में जाकर ठहाके लगाना ठीक नहीं।
दफन हो गये हैं कईयों के पुराने घर,
अपनी मस्ती में उनका दिल जलाना ठीक नहीं।

बाज ने गौरैया को डाला चारा।
कुबेर से गरीब सुदामा फिर हारां।
ब्याज के लालच में फंस गया मूल भी,
राजा भोज ने गंगू तेली मारा।

बन जाते हैं जीवन में मीत अनेकों,
वक्त बेवक्त कितने याद आते हैं।
रच लेते हैं मन ही मन पद कई कई,
नही ंहम सब सहेज कर रख पाते हैं।

कलमकार कई कई आते दुनिया में,
कुछ ही साहित्य क्षितिज पर चमक पाते हैं।
रोज निकलते छिपते सितारे फलक पर,
सबब बनता जब सूरज चांद छिप जाते है।

मुक्तक– सिंहासन अहंकार की भाषा बोल रहा है।
सत्ता का दंभ राष्ट्र में विष घोल रहा है।
धृतराष्ट्र ने पुत्र मोह में मूंदी आंखें,
वर्णिका की हुंकार सुन खून खौल रहा है।

साम्प्रदायिकता, जातिवाद, आरक्षण क्षैत्रिय भाषाई विवाद आतंकवाद नक्सलवाद उग्रवाद गुंडागर्दी बलात्कार, कालाबाजारी मिलावट, लेट लतीफी,विलम्बित न्याय, गरीबी भुखमरी, बेरोजगारी छूआछूत शोषण अत्याचार,भिक्षावृति पाखण्ड प्रदूषण, झूठ फरेब अपहरण रंगदारी लूट, मंहगाई अभाव अकाल मृत्यु महामारियां,आत्म हत्या करते किसान बीमार उद्योग भूमाफिया अवैध खनन, उजडते वन दुर्घटनायें, गिरी हुई गंदी राजनीति लालफीता शाही रिश्वतखोरी भ्रष्टाचार। इसके बावजूद हमारा देश लगातार तरक्की कर रहा है। मेरा भारत महान।

चैरेवेति अतुकांत
उम्मीदें आशायें अनन्त सामर्थ्य सीमित,
असंतुष्ट जन अतृप्त मन,
प्रयासरत गगन छूने को
मात्र दो परों के सहारे
लक्ष्य अंतहीन जीवन अनिश्चित।
चला जा रहा हूं पुनः आने और
अधूरी उड़ान पूरी करने की आकांक्षा लिये।
चैरेवेति चैरेवेति।
जन्म से मृत्यु तक और मृत्यु से पुनःजन्म तक।
यही जीवन शेष अशेष।

वादों को जुमला बताना, जुबान देकर मुकर जाना इनसे सीखो।
मौसम देख बदल जाना थूक थूक चाटते जाना इनसे सीखो।
काठ की हांडी चड़ाना जनता को उल्लू बनाना इनसे सीखो।
गिरगिट सा बदल जाना ख्याली पुलाव पकाना इनसे सीखो।,
कुल्हड़ में हुल्लड़ मचाना तिल का ताड़ बनाना इनसे सीखो।

तीन चावल की खिचड़ी पकाना, चम्मच में दाल बनाना इनसे सीखो।
हथेली पर सरसों उगााना राई का पहाड़ बनाना इनसे सीखो।
झूट को सत्य बताना, सच को शोर में दबाना इनसे सीखो।
रैन कोट पहन कर नहाना, गंजे के सर तबला बजाना इनसे सीखो।
कुर्ते क बांह चढ़ना बस एक राग दरबारी गाना इनसे सीखो।
शहीदों की शहादत भुनाना आंसू बहा कर सत्ता पाना इनसे सीखो।
दुश्मनी शिद्दत से निभाना, सीबी आई जांच कराना इनसे सीखो।

पैरोडी गोपाल दास 'नीरज' कारवां गुजर गया गुबार देखते रहे।
तीमारदार सब खड़े खड़े ताकते रहे, मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।
न वमन रुका न कंपकंपी थमी, न ताप घटा न पलकें उठी।
बुत बन खड़े रह गये नर्स डाक्टर सभी, शरीर छोड़ उड़ गई आत्मा कहीं तभी।
रीत गया घट आसमान झांकते रहे। मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।

खून भेजा था रिपोर्ट आई नहीं है, बाहर से मंगाई दवा खाई नहीं है।
तड़पन ऐसी कि देखी नहीं जाती है। किस्मत भी कभी ऐसी लिखी जाती है।
न पलकें खुली थी न होंठ हिले थे, एक एक सांस पर कई नोट लुटे थे।
सुबह से शाम हुई, आशायें खतम तमाम हुई।
जेबें खाली हो गई, उधार मांगते रहे। मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।

अस्पताल सेवा नहीं कमाई हो गये। डाक्टर भगवान नहीं कसाई हो गये।
खून बेचते और बेचते दवाई, अपनी ही लैब में जांचे करवाई।
फुंसी छोटी सी फोड़ा बन गई, बंद मुठ्ठी हथौड़ा बन गई।
किडनी बेचने वाले भी, अस्मत लूटनें वाले भी।
इन्हीं पर विश्वास कर आगे पीछे भागते रहे। मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।

आंखे खुली हैं पर दृष्टा नहीं है, तन निश्चल है चेष्टा नहीं है।
दीप जला है प्रकाश नहीं है, ईश्वर से भी कोई आस नहीं है।
धड़कने रुक गई सांसें थम गई, पिंजर छोड़ चला गया कीर कहीं।
नीरवता को कर तार तार, गूंज उठा घोर चित्कार,
अपने को ही उठाने में हाथ कांपते रहे, मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।

न छींक आई थी न खांसी चली थी, बीपी शूगर जैसी बीमारी भी नहीं थी।
डेंगू मलेरिया जब कुछ नहीं पाया, अटकलों पर ही सारा इलाज चलाया।

आई विपत्ती अकस्मात्, हुआ घोर वज्रपात।
उल्लासित जीवन क्षण में भार बन गया। सेवा का पेशा आज व्यापार बन गया।
पहाड़ बन गई मुसीबत छोटी मानी थी, कठोर नियती ने न जाने क्या ठानी थी।
बेबस लाचार को वे दुत्कारते रहे,
तीमारदार सब खड़े खड़े ताकते रहे, मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।
मरीज मर गया वो बुखार नापते रहे।

मॉ

दुख कुछ मेरी मां को मत देना भगवान, संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
पुण्य अगर कोई संचित हो मेरा तो, उसका सब फल मां को देना भगवान।
संकट सब – –
बहुत वेदना पहले सह चुकी है, भव्य इमारत जैसे ढह चुकी है।
थकती नहीं चाहे कमर झुकी है, स्वर्ण सोपान में सांस रुकी है।
उसके सपनों को पूरा करना भगवान, दुख कुछ – –

जिसके आंचल में हम पले हुये हैं, अमृत पी छाती का बड़े हुये हैं।
मीठी लोरी ने संस्कार गड़े हुये हैं, उंगली पकड़ जिसकी हम खड़े हुये हैं।
उसके उपकारों को भुला न देना भगवान। संकट सब

संतान के दुख में मां रोती है, उसके खातिर गीले में सोती है।
मां नारी नही कुलदेवी होती है, हमारे लिये सारे सुख खोती है।
ममता की मूरत की सुधि लेना भगवान। संकट सब.

मां ही जग की रीत सिखाती है, मां ही धर्म ध्वजा फहराती है।
मां ही रिश्ते नाते बतलाती है। मां ही घर को स्वर्ग बनाती है।
मां का आशीष बनाये रखना भगवान। संकट सब तुम उसके
. .
मां भजन मां ही आराधना है। मां ही शक्ति मां ही साधना है।
मां आरती मां उपासना है, मां से सिद्ध सब मनोकामना है।
मां के चरणों में ध्यान लगा देना भगवान। दुख कुछ ....

मां का सुख हर्ष, दुख क्रंदन है, सबसे पहले मां को वंदन है।
मातृ चरण रज शीतल चंदन है, मां बच्चों का अटूट बंधन है।
मुझ से उसे दूर मत कर देना भगवान।

दुख कुछ मेरी मां को मत देना भगवान, संकट सब तुम उसके हर लेना भगवान।
पुण्य अगर कोई संचित हो मेरा तो, उसका सब फल मां को देना भगवान।
संकट सब – –

मुक्तक
तू भी गप्पें सुनाता है, वह भी कुत्ते उड़ाता है।
तू भी झूठा बताता है, वह भी लांछन लगाता है।
कैसे विश्वास हो तेरी बात का,
दूसरे दिन ही तू अपने कहे से मुकर जाता है।
तेरा ही भोंपू तुझे जुमलेबाज बताता है।

सच कहने वाला गद्दार नहीं होता,
चापलूस कोई वफादार नहीं होता।
निंदक नियरे रखने की नीति पर चलते तो
रावण कंस का भी यह हाल नहीं होता।

कोई सर खुजाता है, कोई आंसू बहाता है।
कोई हाथ उठाता है, कोई नजरें चुराता है।
इक फेंकू को मगरे पर बिठाया है हमने तुमने,
मुझ को भी सताता है, तुझ को भी रुलाता है।

कभी गन्ना जलाता है, कभी आलू सड़ाता है।
कभी लहसुन चिढाता है, कभी प्याज रुलाता है।
हुक्मरानों से पूछता है देश का गमगीन किसान,
मरने के बाद ही क्यों, वह मरहम लगाता है।

सीघा साधा है तू भी, भोला भोला हूं मैं भी।
ठगा जाता है तू भी, छला जाता हूं मैं भी।
धर्म जाति के नाम पर लूटने वाले आते है,
बहक जाता है तू भी, भटक जाता हूं मैं भी।

जीवन की असलियत बताने आया हूं,
मत समझना किसी को डराने आया हूं।

लाखों का सूट पहन कर मत समझ अपने को खुदा,
तू भी नंगा आया है, मैं भी नंगा आया हूं।

चमकदार तो हैं पर दाग वाले हैं
बाहर गौरे भीतर स्याह काले हैं।
बरसों में बिलों में छिपे बैठे थे बिज्जु
अब तेरी चौखट चाटने आने वाले है।

कोई बेगरूर होता है, कोई मगरूर होता है।
कोई हसीन होता है, कोई बेनूर होता है।
यूं न ठुकराओ हर चाहने वाले को है जालिम,
हर शख्स के पास, धड़कता दिल जरूर होता है।

कोई व्यापारी कहता है, कोई कलमकार समझता है।
कोई कंजूस कहता है, कोई दिलदार कहता है।
अपना तो बहुत कुछ कुरबान है उसके लिये,
जो दिल से हमको अपना यार समझता है।

कोई मगरूर होता है, कोई मजबूर होता है।
कोई दौलतमंद है तो, कोई मजदूर होता है।
जन्नत का दरवाजा खुलता है उसके लिये,
जिसके चेहरे पे खिदमत को दूर होता है।

तू समझता है जिसको खुदा, वही मेरा करतार है।
तू कहता है जिसको रहबर, वही मेरा अवतार है।
हुकुमतों के स्वार्थ ने लड़ाया है तुझको, मुझको,
न तो मैं ही गुनहगार हूं, न तू ही गुनहगार है।

कोई रांझा कहता है, कोई मजनूं समझता है।
मेरा दिल तो केवल तेरे लिये ही धड़कता है।
तुम्हारी रजा की मोहताज हो गई है जिंदगी
कितना भी समझाओ दिल पागल नहीं समझता है।

पर्यावरण और जीवन

प्राचीनकाल में हमारे विद्वान महर्षियों ने जीवन की उत्पत्ति पांच तत्वों से मानी थी। भूमि, जल, वायु, अग्नि और आकाश। मूल रूप से इंसान सहित समस्त प्राणियों का जीवन ईश्वर द्वारा प्रदत्त इन्हीं तत्वों पर निर्भर है। मेरी समझ में पर्यावरण रक्षण का अर्थ इन तत्वों की रक्षा करना ही है, जिससे हमारा जीवन सुगमता से चलता रहें।

भूमि हमें पोषण देती है। अनाज, सब्जियां विभिन्न औषधियों के रूप में। साथ ही भूमि उन पशुओं का भी पोषण करती है जो हमें दूध, ऊन आदि जीवनोपयोगी वस्तुऐं उपलब्ध करवाते हैं। पृथ्वी में प्रदूषण होने से हमें मिलने वाला भोजन प्रदूषित होता है जिससे हमारा स्वास्थ्य क्षरित होता है। मानव द्वारा निर्मित कृत्रिम पदार्थ प्लास्टिक आदि तथा खेती में काम आने वाली कीटाणुनाशक दवाइयां (पेस्टिसाइड्स), रासायनिक खाद आदि निरंतर हमारे भोजन के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर रहे हैं जिससे जीवधारी विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त हो रहे हैं तथा हमारी रोग प्रतिरोधक शक्ति निरंतर कम होती जा रही है। अतः हमें इस धरा को प्लास्टिक तथा कीटनाशकों से बचाने के लिये काम करना चाहिये। खेती में जैविक खाद का प्रयोग बढ़ना चाहिये। घरेलू संसाधनों में प्लास्टिक की जगह कागज, लकड़ी व धातु के सामान का प्रयोग हो।

बढ़ती जनसंख्या एवं विकास की बढ़ती जरूरतों के कारण आज भूमि पर से हरियाली का विनाश हो रहा है। जीवनोपयोगी खनिजों को प्राप्त करने के लिये हम लगातार धरती को खोद रहे हैं। वन क्षैत्र लगातार घट रहे हैं। वनों को काटकर निरंतर कंकरीट के जंगल उगाये जा रहे हैं। वृक्ष हमारे जीवन में बहुत उपयोगी हैं। वृक्ष हमें आक्सीजन, खाद्य पदार्थ औषधियां आदि प्रदान करते हैं। पहले मनुष्य ने वनों की रक्षा करने वाले वन्य जीवों को नष्ट किया, फिर वनों को काटकर उन पर खेती शुरु की। अब खेती की भूमि को व्यवसायिक, आवासीय प्रयोजनों में बदला जा रहा है। सड़कें खेल के मैदान, बांध, पुल, रेल लाइन, एयरपोर्ट आदि में हमारी खेती एवं वन्य भूमि काम आती जा रही है। ऐसे में आगे जाकर हमें अनाज की समस्या का भी सामना करना पड़ सकता है। जरूरत है कि भूमि को बचाने के लिये बहुमंजिली इमारतें तथा बहुउद्देसीय निर्माण कराये जायें। भवनों के नक्शे इस तरह बने कि कोई भवन चौबीसों घंटे उपयोग में आये। जैसे सुबह शाम वाचनालय, दिन में स्कूल और रात को रैन बसेरा। कम काम आने वाली हवाई पट्टियों पर खेल के मैदान या अस्थाई वाहन स्टैण्ड बनाये जा सकते हैं।

जीवन की एक जरूरत हवा भी निरंतर प्रदूषित हो रही है। हरितिमा घटने से हवा में धूल कणों की संख्या बढ़ी है। वायुमंडल में आक्सीजन निरंतर कम हो

रही है और कार्बन आक्साइड बढ़ रही है। वाहनों से निकलने वाला कार्बनिक धुआं शहरों की हवा को दूषित कर रहा है। धूल व जहरीला धुआं सांस द्वारा हमारे फेंफड़ों में जाकर कई बीमारियों को जन्म देता है। वायु प्रदूषण में कृत्रिम पदार्थों के जलने से निकले धुयें, औद्यौगिक गैसों का भी बड़ा हाथ है। इन पर नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है। इसके दुष्प्रभावों को कम करने के लिये वृक्षारोपण ही एकमात्र उपाय है।

सारे जीवों की एक ओर मूलभूत आवश्यकता है पानी। पृथ्वी पर तीन चौथाई भाग जल है इसके बावजूद आज स्वच्छ जल पाना सबसे बड़ी समस्या बन गई है। बढ़ती जनसंख्या ने जल संग्रह के स्थान तालाब, झीलों को सिकुड़ा दिया है। हमारे घरों से निकले शौचालयों के गंदे पानी तथा उद्योंगों से निकले रसायन युक्त पानी ने सभी झीलों, तालाबों एवं नदियों के पानी को प्रदूषित कर दिया है। हमारी आधुनिक दिनचर्या में तथा खेती बागवानी में पानी का उपयोग बहुत बढ़ा है। कई गांवों में आज भी आदमी सुबह नदी या तालाब के किनारे जाकर नहा धो आ जाता है और एक बूंद भी पानी खर्च नहीं होता। आज हमारे शहरी घरों में शौचालयों, स्नानघर, रसोईघर में बहुत पानी बहाया जाता हैं। कपड़े, बर्तन, वाहन और घर की धुलाई में ही सैकड़ों लीटर पानी बह जाता है। ऐसे में इंसान ने धरती की छाती में गहरे तक छेद कर ट्युबवैल से पानी लेकर अपनी जरूरतें पूरी करना शुरु किया और आज धरती का पानी का स्तर कितना कम हो गया है कि इन गहरे नलकूपों पर पाबंदी लगाने तक की बातें होने लगी है। पानी के लिये हमें हमारे पुराने जल स्त्रोतों की और लौटना होगा। घरों में वर्षा जल संचयन के टांके गांवों में कुए एवं कुंडों का निर्माण होना चाहिये। पोखर, तालाब, बांधों की ओर वर्षा जल मोड़कर इन्हें भरने का प्रयास हो और साथ ही कम पानी में होने वाली फसलें ही किसान बोयें।

आज जरूरत है हमें पुरानी दिनचर्या की ओर लौट कर पानी का उपयोग कम करने की। बहुत पानी बहाने वाले शौचालयों की जगह बिना पानी वाले शौचालय बनाने की, कुंड, तालाब या नदी में नहाने व कपड़े धोने को प्रोत्साहन देने की, धोने के जगह पोंचा लगाकर सफाई करने की और सभी तरह से एक एक बूंद पानी बचाने की, ताकि इस धरा पर जीवन बचा रह सके।

जीवन के लिये अग्नि अर्थात् ईधन भी अनिवार्य है। सूर्य अग्नि का असीमित स्त्रोत है। सारा वनस्पति तथा जीव जगत सूर्य की गरमी से ही जिंदा है। अफसोस हमने ऊर्जा के इस अक्षय साधन का बहुत कम उपयोग किया है। मानव ने ईंधन के लिये पहले जंगल काटे, फिर धरती की गहरी खुदाई कर कोयला व तेल प्राप्त करना शुरु किया, पानी के बहाव व हवा की शक्ति को भी ऊर्जा में बदला गया और आज हम परमाणु ऊर्जा के ऊपर निर्भर होते जा रहे हैं। लकड़ी कोयला व पैट्रोलियम पदार्थों के जलने से निकलने वाली गैस वायु प्रदूषण बढ़ाती है। परमाणु ऊर्जा के गंभीर परिणाम इंसान रूस, जापान आदि में

देख चुका है। परमाणु का घातक विकिरण कभी भी इस सभ्यता को नष्ट कर सकता है। अतः जरूरत है कि हम प्राकृतिक ऊर्जा स्त्रोतों का ही ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें।

हमने आकाश को विकृत करने से नहीं छोड़ा है। सूर्य की किरणों के साथ आने वाले हानिकारक पदार्थों को रोकने के लिये हमारी धरती पर ओजोन पर्त बनी हुई है। आज मानवीय आविष्कार जैसे फ्रिज एवं एसी की गैस इस पर्त को बहुत हानि पहुंचा रहे हैं खासकर विकसित देशों में। यदि ओजोन पर्त को क्षतिग्रस्त होने से नही रोका गया तो सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणें इस धरती से जीवन को समूल नष्ट भी कर सकती है। इसी तरह इंसान ने अंतरिक्ष में यान भेजकर एक नई होड़ चालू की है। भारतीय ज्योतिष विज्ञान सभी ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव स्वीकारता है। चंद्र ज्योत्स्ना और सूर्य की तो पूरे विश्व में पूजा की ही जाती है। ऐसे में अंतरिक्ष में मानवीय प्रयास क्या इस ब्रह्माण्ड को प्रभावित नहीं करेंगें? मोबाइल, रेडियों, टीवी व इनके टावर्स से निकल रहा खतरनाक विकिरण भी हमारे आकाश को प्रदूषित कर जीव जगत को हानि पहुंचा रहे हैं।

निजी स्तर पर हम पर्यावरण के लिये क्या कर सकते हैं। किसी भी सूखते हुये पेड़ को पानी देना, या जानवरों से बचाना, कहीं ट्री गार्डस टूट रहे हों तो उन्हें सही करना, घरों में पानी बचाना, बहते पानी को रोकने का प्रयास या संबंधित विभाग में सूचना देना, भोजन में डिस्पोजल के प्रयोग से बचना या कम से कम प्रयोग करना, बाजार में थैला या केटली लेकर जाना ताकि प्लास्टिक थैली की जरूरत न पड़े, प्लास्टिक के सामानों को कई बार काम लेना व बाद में इकठ्ठा कर रिसाइकिलिंग के लिये बेचना, नशे से दूर रहना, जैसे काम हर छोटा बड़ा इंसान कर सकता है। कूलर एसी का प्रयोग न कर खुली हवा में छत पर सोने से भी हम धरती की सेवा कर सकते हैं।

इस धरा पर सभी प्राणी एक दूसरे पर निर्भर हैं। इस प्रकृति में सभी जीवों एवं वनस्पतियों की अपनी महत्ता है। हम इंसान, इस जगत के सबसे बुद्धिमान प्राणी, अपनी बुद्धि एवं शक्ति का प्रयोग कर सभी तरह की जैव विविधता को बचाये रखेंगे तो ही इस विश्व का कल्याण होगा।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि हम प्रकृति के साथ प्रकृति प्रदत्त संसाधनों पर जी कर स्वतः ही पर्यावरण की रक्षा में योगदान कर सकेंगे।

आत्मोत्सर्ग कहानी

प्राचीन काल में मध्यभारत में एक शक्तिशाली दानव राजा हिरण्यकश्यप हुआ। जिसका पुत्र प्रहलाद दानव संस्कृति के विपरीत देव संस्कृति का उपासक था। बहुत समझाने पर भी जब वह देव संस्कृति से विमुख नहीं हुआ तो पिता ने उसे रास्ते से हटाने की सोची। विरोधी मर भी जाये और दोष राज पर भी न आये। अनादि काल से आज तक ऐसे षडयंत्र हो रहे हैं। उसने अपने षडयंत्र में अपनी बहिन होलिका का शामिल किया। होलिका के पास एक ऐसा वस्त्र था जिसे पहनने के बाद वह आग में भी सुरक्षित रह सकती थी। योजना के अनुसार होलिका किलोल करती अपने साथ प्रहलाद को इस निमित्त विशेष रूप से निर्मित ज्वलनशील पर्णकुटी में ले गयी। वहां पूर्व में ही छिप कर बैठे राजा के अनुचरों ने उस कुटिया में आग लगा दी। होलिका ने अग्निरोधक अपने वस्त्र धारण कर रखे थे। आग होलिका के निकट नहीं आ रही थी पर वह प्रहलाद को पीडित कर रही थी। ताप से पीडित हो प्रहलाद ने कातर भाव से अपनी बुआ होलिका को पुकारा। होलिका भी एक नारी थी। चाहे वह दानव वंश की कन्या थी पर फिर भी उसमें नारी सुलभ ममता भी कहीं छिपी हुई थी। उसमें ईश्वर द्वारा प्रदत्त नारी के नैसर्गिक गुण दया, ममता, वात्सल्य, करुणा का कुछ न कुछ अंश तो था ही। ऐसा ही फाल्गुन का महिना जिसमें समस्त जीव धारियों में स्नेह का विशेष आवेग प्रवाहित होता है। प्रहलाद की कातर पुकार सुन उस कठोर महिला के अंदर सोयी वात्सल्य की भावना जाग उठी। कठोरता कोमलता में बदल गयी। होलिका ने प्रहलाद को अपने अंक में ले लिया। अग्निरोधी वस्त्रों से दोनों बच सकते थे पर होलिका के मन में अनेकों आशंकाऐं उठने लगी। उसने भाई को प्रहलाद के वध का वचन दिया था। वचन भंग होने पर उसका क्रूर भाई क्या उसे जीवित छोड़ेगा? यदि छोड भी देगा तो क्या उसे अपमानित हो ताउम्र भाई की दया पर जीना पड़ेगा? क्या एक बार असफल होने पर भाई दुबारा प्रहलाद के वध के प्रयास नहीं करेगा? दुबारा क्या वह उसे बचाने में सफल हो पायेगी? बहुत सोचने के बाद उसने मृत्यु के आलिंगन का ही निर्णय लिया। प्रहलाद को यह समझा कर कि स्वयं भगवान विष्णु ही तुम्हें इस अग्निकांड से बचा रहे हैं, बुआ होलिका ने अपने पूरे अग्निरोधक वस्त्र प्रहलाद के शरीर पर डाल दिये और स्वयं ने दाह कर लिया। देव संस्कृति का उपासक प्रहलाद नारी की ममता से बच गया। उसकी बुआ ने उसे बचाने के लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

प्रहलाद अपनी बुआ के आत्मोत्सर्ग को, बलिदान को भूला नहीं। उसने बुआ को पूरा मान दिया और प्रत्येक फाल्गुन पूर्णिमा को उसके बलिदान स्थान पर जाकर उसकी पूजा अर्चना करने लगा। हिरण्यकश्यप का देव शक्ति के हाथों वध हुआ और प्रहलाद राजा बना। आगे जाकर उसकी प्रजा ने भी राजा का

अनुसरण कर फाल्गुन पूर्णिमा को होली की पूजा कर होली जलाने की परम्परा कायम रखी जो आज हजारों वर्ष बीतने के बाद भी पूरे भारत वर्ष में होली पर्व के नाम से जारी है।

इतिहास विजेता लिखवाता है। देव इतिहासकारों ने दानव कन्या होलीका के बलिदान को सम्मान नहीं दिया परंतु उस नारी का बलिदान आज भी भारतवासियों के मन में अंकित है।

बकरी का दूध कहानी

मामाजी गंभीर बीमार हैं। वैद्यजी ने उन्हें दवा दी है। ताजा बकरी के दूध के साथ लेने के लिये। भरी दोपहर परिवार ने उसे ही बकरी का दूध लाने की जिम्मेदारी दी है। कच्ची बस्ती में कुछ लोग बकरी पालते हैं पर वे शाम को ही दूध दे पायेंगे। मुस्लिम बस्ती में लगभग हर घर में बकरी पाली जाती है पर वहां जाकर दूध के लिये चिरौरी करना उसे अच्छा नहीं लग रहा। वह जिस माहौल में पला है उसमें उसे उस समाज से सिर्फ दूरी रखना सिखाया गया है। अभी दशहरे के जुलुस में भी उसने उनके खिलाफ कैसे कैसे नारे लगाये थे? अब वहीं जाकर दूध ढूंढना उसे पीड़ा दे रहा है। मरता क्या न करता? उसे उस मौहल्ले का ही रूख करना पड़ा। वह अपने समाज का तेज तर्रार नेता है और उसके विरोधी उसे अच्छी तरह पहचानते हैं। उन्हें उलाहने देने का अच्छा अवसर मिल गया।

'तुम तो गाय का ही दूध पिओ जी'।'

'आज बकरी डायन कैसे याद आ गई जी।'

'लो आ गये सूरमा, पहाड़ के नीचे।'

ताने सुनकर भी उसे चुप रहना पड़ा, मामाजी जिंदगी का सवाल जो है। उसे तो पहले ही इन लोगों से सहयोग की कोई उम्मीद नहीं थी। उसे लोग इस घर से उस घर और इस गली से उस गली नचाते रहे। पर भले मानुष भी ईश्वर ने सब जगह बनाये हैं, जैसे रावण के राज में विभिषण। ऐसा ही एक भला मानुष उसे अत्यन्त संकरी व गंदी गलियों में घुमाता हुआ एक तिमंजिले मकान के सामने ले गया।

'अल्लाह खैर करे यहां दूध मिल जावे तो, वरना शाम को तो मैं दे ही दूंगा।'

चबूतरी पर छोटी प्यारी से बच्ची पछीटे उछाल उछाल कर खेल रही थी।

'अम्मी कहां है।'

'छत पर सिवइयां तोड़ रही है।'

'अम्मी जान! अम्मीजान! ये दवाई के लिये दूध लेने आये हैं।'

'कौन? जहीर बेटा, अभी आती हूं।'

कुछ देर बाद एक पके बालो वाली बुढिया तीन जीने उतर कर नीचे आई।

'बकरी तो सब फिरने गई है। जहीर बेटा इधर गली के पीछे देख झबरी बैठी हो या काली बैठी हो तो पकड़ कर ले आ।'
जहीर गली में गया और कुछ ही देर में झबरी बकरी का कान पकड़ कर ले आया।
'आ जा झल्ली।'
जहीर ने बकरी को छोड़ दिया और झबरी आज्ञाकारी बेटी की तरह चौक में जाकर खड़ी हो गई। अम्मा ने एक मुठ्ठी दाना उसके आगे डाला और पतीली ले दूध निकालने की तैयारी करने लगी। अब उससे नही रहा गया,
'अम्माजी मेरी केटली में ही सीधा दूध निकाल कर दे दो ना?'
'हां मैं समझ रही हूं बटा। तुम बनिये बामन हमारे बर्तनों को अछूत मानते हो पर तू चिंता मत कर। इस डेगची को हम कोई और काम नहीं लेते। यह सिर्फ दूध निकालने के ही काम आती है। हम तुम्हारे धर्म का भी ख्याल रखते हैं। तेरे बर्तन में मेरा औसान नहीं बैठेगा, नही तो उसी में दूध निकाल देती, और यह झल्ली मेरे अलावा किसी को नीचे बैठने नहीं देती, नही तो तू ही दूध निकाल कर ले जाता।

कमाल है अम्मा ने उसके मन का चोर झट पकड़ लिया। स्नेह भरा बोल मिला तो वह फिर पूछ बैठा, 'यह बकरी कभी भी दूध दे देती है?'

'हॉ, हमारे पास चार बकरियां हैं। हम जितनी जब जरूरत हो दूध निकाल कर बकरी को छोड़ देते हैं। टेम बेटेम वेद हकीम की दवा लेने वाले, बिन मां के बच्चों वाले बड़ी उम्मीदों से दूध लेने आते हैं उन्हें कैसे वापस फेरुं?'
वह इतनी देर से वहां न जाने कैसे खड़ा था। सड़े हुये बीड़ी के पत्ते, बकरी की मेंगनी व पेशाब की बदबू, गलियों की नालियों में फैली गंदगी और ऐसे नरक में इतने उत्तम विचारों वाली विधर्मी मां। इतनी मेहनत करके मुझे दूध उपलब्ध करवा रही है पता नहीं पैसे भी कितने लेगी?
मन की बात पढ़ने में अम्माजी माहिर थी। बोली,

'तुम्हें यहां बास आ रही है पर यह हमारे लिये खुशबू है। तुम लोग बकरी नहीं पालते क्योंकि तुम्हारे धर्म में बकरा बेचने में पाप लगता है। लो हो गया न पाव भर दूध। अम्मी जी ने उसकी केटली में दूध बिना नाप जोख किये उन्ढेल दिया। उसने जेब में हाथ डाल कर पचास का नोट अम्माजी की तरफ बढाया।

'नहीं बेटा हम दूध बेचते नहीं हैं।'

अम्माजी ने हाथ के इशारे से पैसे लेने से मना करते हुये कहा। उसके जेहन में झट से आया कि उनके परिवार में भी दूध नहीं बेचते। बड़े बुजुर्ग कहते थे कि दूध दही बादि बेचना पाप होता है। कमाल है इस मुस्लिम परिवार में भी यही संस्कार यही रिवाज है? पर दुश्मन का अहसान लेना उसे बोझ सा लगा।
'अम्माजी! मैं बिना मोल चुकाये तो दूध नहीं ले जाऊंगा।'

'तो तुम कीमत चुकाना ना किसी जरूरतमद की मदद करके। किसी इंसान का भला करके। तुम्हें कौन रोकता है? आजादी के समय हमारे वो पाकिस्तान जाना चाहते थे तो सेठ पुखराज जी आड़े फिर गये। उन्होंने हमारी बहुत मदद कीं। अब अल्लाह का फजल हैं तो जो थोड़ा बहुत हम से बन रहा हैं कर्ज उतार रहे हैं। मैं तो बस यही चाहती हूं कि धर्म कोई हो, हिन्दु हो या मुसलमान पर सब पहले इंसान बनें।

वह हाथ में दूध की केटली लटकाये और आंखों मं आंसू लिये लौट रहा था। वह अंदर से बिल्कुल बदल चुका है। वेद पुराण गीता का सही मतलब उसे आज समझ में आया है। घर्म से कोई अच्छा बुरा नहीं होता। अच्छे बुरे लोग हर धर्म में होते हैं।

धन्यवाद